International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 494-497

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 494-497
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 21-11-2020
Accepted: 06-01-2021

डॉ. जयदेव
अतिथि शिक्षक, महर्षि दयानन्द सरस्वती विष्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. जयदेव
अतिथि शिक्षक, महर्षि दयानन्द सरस्वती विष्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

शब्दों के अर्थपरिवर्तन का भाषा–वैज्ञानिक अध्ययन

डॉ. जयदेव

शोध–सारांष
मानव अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जिस सार्थक मौखिक एवं लिखित साधन को अपनाता है, वह भाषा है। विश्व के प्रायः सभी देशों में हो या प्रान्तों में कोई न कोई भाषा बोली जाती है और वही भाषा उस क्षेत्र विशेष के मानव के विचार–विनिमय का माध्यम बन जाती है। इस संसार की प्रायः सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं। अतः मानव द्वारा प्रयुक्त भाषा भी परिवर्तनशीला है। परिवर्तन का यह नियम स्वाभाविक है, किन्तु अज्ञानतावश और स्वार्थवश या विभिन्न कारणों से किया गया/हुआ परिवर्तन (विशेष रूप से शब्दों के अर्थों में) समाज में उत्पन्न विभिन्न भ्रान्तियों का कारण बन सकता है। वर्तमान में हिन्दी में प्रयोग किए जाने वाले शब्द लगभग नवदशमांश संस्कृत के हैं, जिन्हें हिन्दी में तत्सम शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है। किन्तु दोनों भाषाओं में एक ही शब्द के भिन्न–भिन्न अर्थ पाए जाने से तथा विभिन्न वर्गों, मज़हबों, सम्प्रदायों एवं बुद्धिजीवियों द्वारा पृथक्–पृथक् अर्थ–निर्धारण से जहाँ एक ओर समाज में विभिन्न प्रकार भ्रान्तियाँ व विशृंखलाएँ उत्पन्न हो रहीं हैं वहीं समाज के लोग वास्तविक अर्थ–ज्ञान से वंचित रह जाते हैं। यह एक विचारणीय बिन्दु है कि हिन्दी भाषा में प्रयुक्त संस्कृत–शब्दों के मूल एवं वास्तविक अर्थ में कैसे परिवर्तन हुआ ? इसके पीछे क्या कारण रहे होंगे ? अतः यह शोधपत्र हिन्दी भाषा में प्रयुक्त दैनिक जीवनोपयोगी कुछ प्रचलित संस्कृत–शब्दों को संस्कारहीन एवं अनर्थहीन होने से बचाने में अत्यन्त लाभदायक व उपयुक्त सिद्ध हो सकता है।

कूट शब्दः अर्थपरिवर्तन, भाषा–वैज्ञानिक, मानव के विचार–विनिमय

प्रस्तावना
भावाभिव्यक्ति में आलङ्कारिक प्रयोगों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतः वक्ता या लेखक अपने भावों को अधिक से अधिक स्पष्ट, सुन्दर एवं प्रभावशाली रूप में व्यक्त करने के लिए बहुधा आलङ्कारिक प्रयोगों का सहारा लेता है।
प्रारम्भ में जब कोई वक्ता या लेखक किसी शब्द का प्रयोग उसके शाब्दिक अर्थ से भिन्न अर्थ में आलङ्कारिक रूप में करता है तो उसके आलङ्कारिक रूप का ध्यान रहता है, किन्तु कालान्तर में निरन्तर प्रयोग से आलङ्कारिक भाव लुप्त हो जाता है और वह भिन्न अर्थ ही उस शब्द का सामान्य अर्थ बन जाता है।
आलङ्कारिक प्रयोग अधिकतर सादृश्य–भाव पर आधारित होते हैं। आलङ्कारिक प्रयोगों से शब्दों में अर्थ–परिवर्तन बहुत शीघ्र होता है।
इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भाषा के व्यवहार में आलङ्कारिक प्रयोगों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है और उनसे भाषा की शब्दावली के भाव–पक्ष की बहुत अधिक वृद्धि होती है।
यहाँ कुछ ऐसे शब्दों के अर्थ–विकास का विवेचन किया जा रहा है, जिनमें कुछ विशिष्ट आलङ्कारिक प्रयोग दिखाई पड़ते हैं।

स्वाहा
हिन्दी में 'स्वाहा' शब्द का प्रयोग हवन के समय अग्नि में दी जाने वाली आहुति के साथ उच्चारण किया जाता है और नष्ट कर देना या फूँक डालना (नूतन अर्थ जो आजकल समाचार–पत्रों में अधिकतर प्रयोग किया जाता है) आदि अर्थों में भी किया जाता है।
संस्कृत में 'स्वाहा' शब्द (सु+आ+ह्वे+डा)[1] का प्रयोग केवल यज्ञादि के समय आहुति प्रदान के साथ प्रयोग किया जाता है, जैसे–

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।
ओं इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदं न मम।[2]

किन्तु आजकल हिन्दी में प्रचलित दूसरा अर्थ 'नष्ट कर देना, फूँक डालना' संस्कृत में सर्वथा अभाव है। हिन्दी में सादृश्य–भाव के आधार पर यह अर्थ प्रयोग किया जाने लगा है। हवन में जो हवि (आहुति) अग्नि के लिए छोड़ी जाती है, वह सब भस्म हो जाती है। इसके सादृश्य–भाव से किसी वस्तु के नष्ट होने या पूर्णरूप से जल जाने को आलङ्कारिक रूप में 'स्वाहा होना' कहा जाने लगा है (जैसे– उसके घर आग लगने से सारी सम्पत्ति 'स्वाहा' हो गई)। इस प्रकार हिन्दी में 'नष्ट होने' के लिए प्रयोग किया जाने वाला 'स्वाहा' शब्द हिन्दी में मुहावरे के रूप में (स्वाहा करना–फूँक डालना, नष्ट कर देना) प्रयोग किया जाता है।

कर्णधार

हिन्दी में 'कर्णधार' पुं. शब्द का अर्थ है– 'वह जो किसी समूह, संगठन, समाज या राष्ट्र का नेतृत्व करते हुए कोई कार्य करता हो, नेता' (जैसे–लाल बहादुर शास्त्री हमारे देश के कुशल कर्णधार थे)। संस्कृत में 'कर्णधार' शब्द का यह अर्थ नहीं पाया जाता। संस्कृत में 'कर्णधार' पुं. शब्द (कर्ण्यते आकर्ण्यते अनेन–कर्ण्+अप्, धृ+णिच्+अच् कर्णं धारयति इति) का मौलिक अर्थ है– 'नाविक, मल्लाह'[3] (कर्ण–जहाज या नाव की पतवार, धार= धारण करने वाला) ।

हिन्दी में प्रयुक्त अर्थ संस्कृत के 'कर्णधार' अर्थ से विकसित हुआ है। जिस प्रकार नाविक किसी नाव को खेने वाला होता है, उसे अपने सामर्थ्य से आगे ले जाता है, उसी प्रकार 'नाविक' के सादृश्य–भाव से जब कोई व्यक्ति हमारे समाज या राष्ट्र का संचालन अथवा नेतृत्व करता है, उसे एक दिशा प्रदान करने का प्रयत्न करता है, उसे 'कर्णधार' कहा जाने लगा, जैसे– वर्तमान हमारे देश के कर्णधार– श्रीमान् नरेन्द्र मोदी हैं। 'कर्णधार' शब्द का नाविक अर्थ में आलङ्कारिक रूप में वेणी संहार में प्रयोग पाया जाता है।[4]

सूत्रपात

हिन्दी में 'सूत्रपात' पुं. शब्द 'प्रारम्भ, शुरू' अर्थ में प्रचलित है (जैसे– विद्यालय–भवन के कार्य का सूत्रपात हो गया है)। 'सूत्रपात' शब्द का 'आरम्भ या प्रारम्भ' अर्थ संस्कृत में नहीं पाया जाता। इस अर्थ का विकास आधुनिक काल में ही हुआ है तथा इस शब्द का प्रयोग भी (संस्कृत) में कम देखने को मिलता है। अतः प्राचीन संस्कृत–शब्द कोशों में इसके उल्लेख का भी अभाव है।

> संस्कृत में 'सूत्रपात' पुं. शब्द (सूत्रस्य पातनम्) का अर्थ है 'नापने की डोरी डालना'।[5]

प्राचीन काल से लेकर आज भी कुछ स्थलों पर भवन–निर्माण के कार्य में नींव डालते समय डोरी (सूत्र) द्वारा नापने की प्रक्रिया अपनाई जाती है, जिसे पहले 'सूत्रपात' कहा जाता था और इसी 'सूत्रपात' कार्य को ही उस निर्माणाधीन भवन का 'आरम्भ या प्रारम्भ' माना जाता है। इस कारण भवन–निर्माण के प्रारम्भ में नापने की डोरी का प्रयोग होने के कारण 'नापने की डोरी डालना' के वाचक 'सूत्रपात' शब्द के साथ 'आरम्भ' का भाव जुड़ गया और किसी कार्य के आरम्भ को आलङ्कारिक रूप में 'सूत्रपात' कहा जाने लगा। यह आरोपित अर्थ वैसे ही प्रयुक्त है जैसे आजकल हिन्दी में किसी भी प्रकार के कार्य का 'प्रारम्भ करने' को उसकी 'नींव डालना' कहा जाता है। संस्कृत में 'सूत्रपात' शब्द का प्रयोग यद्यपि 'प्रारम्भ' अर्थ में नहीं पाया जाता, तथापि ऐसा प्रयोग अवश्य पाया जाता है, जहाँ कि किसी वस्तु के आरम्भ में 'सूत्रपात' के रूप में कल्पना की गई है, जैसे–

> देवि, पश्यैषा त्वमपि..... देवीं, वत्सस्य यौवनारम्भसूत्रपातरेखा..... विवाहमङ्गल–सम्पादनायादिशति।[6]

यहाँ मूछों की पङ्क्ति की शोभा को यौवनारम्भ की 'सूत्रपात रेखा' कहा गया है। भाव यह है कि जिस प्रकार नापने की डोरी डालकर की गई रेखा भवन–निर्माण के आरम्भ की सूचना देती है, उसी प्रकार मूछों की पङ्क्ति की शोभा मानो यौवनारम्भ की सूचक है।

समस्या

हिन्दी में 'समस्या' स्त्री. शब्द का अर्थ है– 'वह उलझन वाली विचारणीय बात जिसका निराकरण आसानी से न हो सके, कठिन विषय या प्रसङ्ग' (जैसे– पढ़ाई की समस्या, खाद्य समस्या)। संस्कृत में 'समस्या' शब्द का यह अर्थ नहीं पाया जाता है। इसका विकास सम्भवतः आधुनिक काल में ही हुआ है। संस्कृत में 'समस्या' स्त्री. शब्द (सम्+अस्+क्यप्+टाप्) का मौलिक अर्थ है– 'मिलाने की क्रिया'। अर्थात् 'समस्या' शब्द का प्रयोग अधिकतर किसी श्लोक या छन्द आदि के उस अन्तिम पद या चरण के लिए पाया जाता है, जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छन्द तैयार किया जाए।

किसी श्लोक या छन्द के एक पद या चरण के आधार पर सम्पूर्ण को मिलाए या पूरा किए जाने के कारण उस पद या चरण को 'समस्या' और 'समस्या पूर्ति' कहा गया (समस्यते संक्षिप्यतेऽनया)।

समस्या पूर्ति के सादृश्य से संस्कृत में समस्या शब्द के 'अपूर्ण की पूर्ति' अर्थ का भी विकास हुआ, जैसे–

> ''गौरीव पत्या सुभगा कदाचित् कर्त्रीयमप्यर्धतनूसमस्याम्''
> (सौभाग्यवती यह दमयन्ती कभी गौरी के समान पति के आधे अङ्ग की पूर्ति करेगी)।[7]

'समस्या' शब्द का 'कठिन विषय या प्रसङ्ग' अर्थ 'समस्या पूर्ति' अर्थ से विकसित हुआ है। क्योंकि किसी शब्द या श्लोक का उसके एक पद या चरण या चरणांश के आधार पर पूरा करना कठिन कार्य होता है। उसके लिए सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता होती है। अतः 'समस्या पूर्ति' के कठिन होने के सादृश्य से 'किसी भी कठिन विषय या प्रसङ्ग' को पहले आलङ्कारिक रूप में 'समस्या' कहा गया होगा। बाद में आलङ्कारिक रूप लुप्त हो जाने पर 'कठिन विषय या प्रसङ्ग''' (अर्थात् वह उलझन वाली विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सके) ही समस्या शब्द का सामान्य अर्थ समझा जाने लगा।

बलिदान

हिन्दी में 'बलिदान' पुं. शब्द अधिकतर 'न्यौछावर' अथवा 'उत्सर्ग' अर्थ में प्रचलित है, (जैसे– देश की आजादी के लिए अनेक देशभक्तों ने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया)। यह अर्थ संस्कृत में नहीं पाया जाता।

संस्कृत में 'बलिदान' नपुं. शब्द (बल्+इन=बलि, दा+ल्युट्=दान) का अर्थ– 'किसी देवता को भेंट चढ़ाना या अर्पण करना, सभी जीव–जन्तुओं को अन्न की भेंट'[8]। हिन्दी में भी 'बलिदान' शब्द का 'किसी देवता को भेंट चढ़ाना', विशेषकर बकरे, भैंस आदि काटकर चढ़ाना अर्थ पाया जाता है। किसी देवता को किसी प्रकार की भेंट उसके प्रति भक्ति प्रदर्शित करने के लिए चढ़ाई जाती है। इसी सादृश्य–भाव से जब कोई व्यक्ति किसी अच्छे कार्य के लिए देश या समाज के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित करता हुआ अपना सर्वस्व–न्यौछावर कर देता है, उसे आलङ्कारिक रूप में 'बलिदान' कहा जाने लगा।

इस प्रकार 'बलिदान' शब्द का 'न्यौछावर' अर्थ आधुनिक काल में ही विकसित हुआ है। यह अर्थ सम्भवतः किसी भी हिन्दी तथा संस्कृत शब्दकोश में अनुपलब्ध है।

श्रीगणेश

हिन्दी में 'श्रीगणेश' पुं. शब्द 'प्रारम्भ' अर्थ में प्रचलित है (जैसे– अमुक कार्य का श्रीगणेश हो गया है)। यह अर्थ संस्कृत में नहीं पाया जाता। इसका विकास हिन्दी में ही हुआ है। 'श्रीगणेश' शब्द का हिन्दी तथा संस्कृत के किसी भी शब्दकोश में भी उल्लेख नहीं मिलता। यह शब्द (श्रीगणेश) दो शब्दों से मिलकर बना है।

'श्रीगणेश' शब्द का 'प्रारम्भ' अर्थ 'श्री गणेशाय नमः' के संक्षेप के रूप में प्रयोग किया जाने के कारण विकसित हुआ है।
संस्कृत के प्राचीन लेखकों में यह प्रवृत्ति पाई जाती थी कि वे अपना ग्रन्थ प्रारम्भ करने से पूर्व ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए अपने–अपने इष्ट देवता का स्मरण करते हुए 'श्री गणेशाय नमः', 'भगवते वासुदेवाय नमः' आदि (वाक्यांश/वाक्य)[9] लिखा करते थे। इस परिपाटी का प्रचलन आज भी देखने को मिलता है। गणेश के भक्तों द्वारा ग्रन्थ के प्रारम्भ में 'श्रीगणेशाय नमः' का प्रयोग किया जाने के कारण 'श्रीगणेशाय नमः' प्रारम्भ का सूचक बन गया। फिर आलङ्कारिक रूप में कार्य के आरम्भ को 'श्रीगणेशाय नमः' कहा जाने लगा। बाद में 'प्रारम्भ' के लिए पूरा वाक्य 'श्रीगणेशाय नमः' न कहकर अपनी सुविधा की दृष्टि से वाक्य का संक्षिप्त रूप 'श्रीगणेश' ही कहा जाने लगा। धीरे–धीरे अर्थ के विस्ताार हो जाने से प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ के लिए हिन्दी में 'श्रीगणेश' शब्द का सामान्य रूप में प्रचलित हो गया।

तिलांजलि

'तिलांजलि' स्त्री. शब्द हिन्दी में 'सदा के लिए परित्याग करने' अर्थ में प्रचलित है। आजकल 'तिलांजलि देना' एक मुहावरा बन गया है। जब कोई व्यक्ति वस्तु या कार्य को बिल्कुल छोड़ देता है, तो वह कहता है कि मैंने अमुक वस्तु अथवा कार्य को 'तिलांजलि' दे दी है। यह अर्थ संस्कृत में नहीं पाया जाता। संस्कृत के शब्दकोशों में 'तिलांजलि' शब्द प्राप्त नहीं है। यह आधुनिक काल में (तिल+अंजलि से मिलकर) बना है। जिसका संस्कृत में मौलिक अर्थ है 'किसी के मरने पर अंजलि में जल और तिल लेकर उसके नाम से छोड़ना'।
मृतक को तिल–मिश्रित जल अर्पित करने की क्रिया के लिये संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में 'तिलांजलि' शब्द का प्रयोग नहीं पाया जाता अपितु इसके लिए तिलाप्[10], तिलाम्बु[11], तिलोदक[12] आदि शब्दों का प्रयोग पाया जाता है।
किसी के मरने पर जीवित सम्बन्धियों का मृतक से साथ छूट जाता है। अतः ऐसी अवस्था में जब किसी को दुःख के साथ किसी को छोड़ना पड़े उसे तथा तिल और जल को अंजलि में लेकर अर्पित किए जाने के कारण 'तिलांजलि' शब्द के साथ किसी के सम्बन्ध छूट जाने के भाव को आलङ्कारिक रूप में कहा गया होगा कि मैंने उसे 'तिलांजलि' दे दी है।
यह स्पष्ट है कि पहले 'तिलांजलि देना' मुहावरे का प्रयोग 'छोड़ देना' अर्थ में किसी प्रिय–जन का साथ छोड़ने के लिए ही किया जाता होगा, बाद में किसी भी कार्य–वस्तु, विचार आदि को छोड़ने के लिए भी 'तिला।जलि देना' मुहावरे का प्रयोग होने लगा। हिन्दी के अतिरिक्त मराठी में भी 'तिलांजलि' शब्द का 'छोड़ देना' अर्थ पाया जाता है, बंगाली भाषा में 'विदाई' अर्थ में प्रयोग किया जाता है।

जटिल

हिन्दी में 'जटिल' वि. शब्द 'कठिन, दुरूह या दुर्बोध' अर्थ में प्रचलित है (जैसे– यह बड़ा जटिल प्रश्न है)। संस्कृत में 'जटिल' शब्द का यह अर्थ नहीं पाया जाता।
संस्कृत में 'जटिल' वि. शब्द (जटा+इलच्) का मौलिक अर्थ है 'जटा वाला, जटाधारी, संन्यासियों की तरह'। प्राचीन काल में ब्रह्मचारी अथवा संन्यासी लोग जटा रक्खा करते थे, अतः जटा वाला होने के कारण उनको 'जटिल' कह दिया जाता था।
संस्कृत में 'ब्रह्मचारी' के लिए 'जटिल' शब्द का प्रचुर प्रयोग पाया जाता है, जैसे–

> ''विवेश कश्चिज्जटिलस्तपोवनम्''[13] (कोई जटाधारी ब्रह्मचारी तपोवन में प्रविष्ट हुआ)।

संस्कृत में 'जटिल' शब्द के 'जटाधारी या जटायुक्त' अर्थ से 'उलझा हुआ, सघन' आदि अर्थों का विकास पाया जाता है। क्योंकि जटाएँ प्रायः सघन तथा उलझी हुई होती है। अतः उनके सादृश्य से किन्हीं भी उलझी हुई और सघन वस्तुओं के लिए विशेषण के रूप में 'जटिल' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा।
संस्कृत में 'जटिल' शब्द का प्रयोग बहुधा बालों के वाचक शब्दों के विशेषण के रूप में पाया जाता है।[14]
सादृश्य–भाव से किसी दुरूह अर्थात् ऐसी उलझन वाली पेचीदा बात को, जिसका करना अथवा समझना कठिन हो, आलङ्कारिक रूप में 'जटिल' कहा जाने लगा। आजकल हिन्दी में 'जटिल' शब्द 'दुरूह' अथवा 'दुर्बोध' अर्थ में ही प्रचलित है, 'जटायुक्त, ब्रह्मचारी, सघन' आदि अर्थ नहीं पाए जाते।

इतिश्री

हिन्दी में 'इतिश्री' स्त्री. शब्द 'समाप्ति' अर्थ में प्रचलित है (जैसे– अमुक कार्य की इतिश्री हो गई)। यहाँ यह ध्यातव्य है कि 'इतिश्री' का एक शब्द के रूप में सम्भवतः हिन्दी और संस्कृत में किसी भी प्रामाणिक शब्दकोश में उल्लेख नहीं मिलता है। यह शब्द आधुनिक काल में (इति+श्री मिलकर) विकसित हुआ है। संस्कृत में 'इति' शब्द के अर्थ हैं– समाप्ति, इसलिए, इस प्रकार आदि और 'श्री' शब्द के अर्थ हैं– धन, लक्ष्मी, आदरसूचक आदि।

> 'इतिश्री' शब्द का 'समाप्ति' अर्थ 'श्रीगणेश' के 'प्रारम्भ' अर्थ के समान विकसित हुआ है।

संस्कृत के प्राचीन लेखकों में यह प्रवृत्ति पाई जाती है कि वे अपना ग्रन्थ या कोई अध्याय या प्रकरण समाप्त हो जाने पर अन्त में 'इति' से युक्त एक समाप्ति सूचक वाक्य लिखते थे, जैसे–

> इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामीकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविभूषित ईश्वरनामविषये प्रथमः समुल्लासः सम्पूर्णः।[15]

ग्रन्थ की समाप्ति पर इस प्रकार लिखे जाने वाले वाक्य में 'इति' शब्द 'इस प्रकार' अर्थ में होता है और 'श्री' आदर सूचक शब्द है, जो ग्रन्थकर्ता के अथवा पुस्तक के नाम के पहले भी लगा होता है। ग्रन्थ की समाप्ति पर 'इतिश्री.....' आदि वाक्य लिखा जाने के कारण उसके साथ समाप्ति का भाव भी जुड़ गया और कालान्तर में 'समाप्ति' को आलङ्कारिक रूप में समाप्ति–सूचक वाक्य के संक्षिप्त रूप 'इतिश्री' द्वारा ही लक्षित किया जाने लगा। किन्तु बाद में इसके अर्थ में विस्तार हो गया और सभी प्रकार के कार्यों की 'समाप्ति' के लिए 'इतिश्री' शब्द का प्रयोग सामान्य रूप में किया जाने लगा।

उत्तीर्ण

हिन्दी में 'उत्तीर्ण' विषेषण शब्द का अर्थ है 'परीक्षा में सफल' (पास)। यह अर्थ संस्कृत में नहीं पाया जाता। संस्कृत में 'उत्तीर्ण' शब्द (उद्+तृ+क्त) का प्रयोग अधिकतर 'पार गया हुआ, निकला हुआ' आदि अर्थों में पाया जाता है। हिन्दी में प्रयुक्त 'उत्तीर्ण' शब्द का 'परीक्षा में पास' अर्थ यत्र–कुत्र, शब्द कोशों में प्राप्य तो है, किन्तु उस 'उत्तीर्ण' शब्द के 'परीक्षा में पास' अर्थ विषय में, किसी ग्रन्थ का निर्देश नहीं दिया है। सम्भवतः 'परीक्षा में पास' अर्थ आधुनिक काल में विकसित हुआ है।[16]
ऐसा प्रतीत होता है कि 'उत्तीर्ण' शब्द का मौलिक अर्थ 'पार गया हुआ' होने के कारण 'जिसने शिक्षा समाप्त कर ली हो' उसे आलङ्कारिक रूप में 'उत्तीर्ण' कहा जाने लगा और बाद में इस अर्थ में किंचित् विस्तार हो जाने से 'परीक्षा में पास' को 'उत्तीर्ण' कहा जाने लगा। 'परीक्षा में पास' के लिए 'उत्तीर्ण' शब्द का प्रयोग करने में परीक्षा रूपी सागर से पार होने तथा निर्धारित पाठ्यक्रम द्वारा किसी एक कक्षा विशेष की शिक्षा पूरी कर लेने (पार कर जाने) का भाव भी रहा होगा।[17] इसी प्रकार संस्कृत में 'पार जाना' अर्थ वाले 'पारायण', 'पार ले जाना' अर्थ वाले 'पारण' तथा 'चतुर'[18] (किसी विषय की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने वाला) अर्थ वाले

'पारङ्गत' शब्दों के 'पढ़ना, भली–भाँति अध्ययन करना, एवं प्रकाण्ड विद्वान्' आदि अर्थों का विकास हुआ है।

सन्दर्भसूची–

1. आप्टे शब्दकोष
2. यजुर्वेद 22–27, 32
3. अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव। हितोपदेष 3.2
4. अविनयनदीकर्णधारकर्ण 'अविनय रूपी नौका का नाविक कर्ण'। वेणीसंहार अङ्क–4
5. मोनियर विलियम्स : संस्कृत–इंग्लिश–डिक्शनरी, गूगल–इन्टरनेट से उद्धृत आप्टेशब्दकोश में 'सूत्रपात' शब्द का उल्लेख नहीं किया गया है।
6. कादम्बरी पृ.सं. 541
7. नैषधीयचरितम् 7.83
   ''समस्या' शब्द का 'कठिन विषय या प्रसङ्ग' अर्थ भारत की कई अन्य (गुजराती, मराठी, बंगाली तथा नेपाली आदि) भाषाओं में भी पाया जाता है।
8. आप्टेशब्दकोश।
9. जैसे– ग्रन्थारम्भे विघ्नविघाताय समुचितेष्टदेवतां ग्रन्थकृत्परामृशति। काव्यप्रकाष उल्लास–1
10. एते यदा मत्सुहृदोस्तिलापः। भागवतपुराण 10.12.15
11. तीर्थसमयेऽप्यपिबत्तिलाम्बु। वही, 7.8.45
12. तेषां दत्त्वा तु हस्तेषु सपवित्रं तिलोदकम्। मनुस्मृति 2.223
13. (क) कुमारसंभवम् 5.30
    (ख) जटिलं चानधीयानं दुर्बलं कितवं तथा।
    याजयन्ति च ये पुंगास्तांश्च श्राद्धे न भोजयेत्।। मनुस्मृति 3.15.1
14. विजानन्तोऽप्येतान् वयमिह विपज्जालजटिलान् न मुञ्चामः। (शान्ति० १.८)
15. (क) सत्यार्थप्रकाश – प्रथम समुल्लास ।
    (ख) इतिश्रीकेशवमिश्रविरचिता तर्कभाषा समाप्ता। तर्कभाषा
16. दिष्ट्या भो व्यसनमहार्णवादपारादुत्तीर्णं गुणधृतया सुशीलवत्या। मृच्छकटिकम् 10.49
17. स पल्लोत्तीर्णवराहयूथान्यावासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि। रघुवंषम् 2.17
18. सकलशास्त्रपारङ्गतः। पंचतन्त्रम्